श्रीविष्णु

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

अब तक इस लघुग्रन्थ की ८,२०० प्रतियां प्रकाशित !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्म के प्रसार हेतु 'सनातन संस्था' की स्थापना !

२. 'गुरुकृपायोग' नामक साधनामार्ग के जनक !

३. हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

४. गुरुकुलसमान 'सनातन आश्रमों' की निर्मिति !

५. ग्रन्थ-रचना : मार्च २०२४ तक ३६५ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९५ लाख ३१ सहस्र प्रतियां !

६. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियों की पीडाओं की उपचार-पद्धतिसम्बन्धी शोध !

७. 'सनातन प्रभात' नियतकालिकों के संस्थापक-सम्पादक !

८. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर मार्गदर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें - 'www.Sanatan.org'.)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

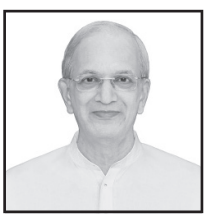

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥

– जयंत बाळाजी आठवले
१७.५.१९९६

डॉ. जयंत आठवलेजी की ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका’ के वाचन के माध्यम से सप्तर्षि की आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी को ‘सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले’ सम्बोधित किया जा रहा है । इन उपाधियों के अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर एवं ग्रन्थ में आवश्यक स्थानों पर वैसा उल्लेख किया है । – **(पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातन के ग्रन्थों के संकलनकर्ता** (२४.७.२०२२)

अनुक्रमणिका

卐 श्रीविष्णु से सम्बन्धित विवेचन का महत्त्व ७

卐 भूमिका ८

卐 परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी लिखित ग्रन्थों एवं लघुग्रन्थों की वास्तविक फलोत्पत्ति ! ९

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ ११

२. कुछ अन्य नाम १२

३. मूर्तिविज्ञान १३

४. रूप एवं परिवार १७

५. कार्य एवं विशेषताएं २०

६. दशावतार २५

७. निवास एवं विष्णुलोक (वैकुण्ठ) २७

८. भारत स्थित श्रीविष्णु के प्रसिद्ध मन्दिर २८

९. उपासना २८

भूमिका

अधिकांश लोगों को देवता से सम्बन्धित जो थोडा ज्ञान रहता है, वह बचपन में पढी या सुनी कहानियों द्वारा होता है । इस अल्प ज्ञान के कारण देवता पर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवता से सम्बन्धित अधिक ज्ञान प्राप्त होने पर अधिक विश्वास निर्मित होने में सहायता मिलती है । विश्वास का रूपान्तर आगे श्रद्धा में होता है । जिससे देवता की उपासना एवं साधना भी उचित ढंग से हो पाती है । इस दृष्टिकोण से इस लघुग्रन्थ में श्रीविष्णु से सम्बन्धित प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान देने पर विशेष ध्यान दिया है । श्रीविष्णु के विषय में अधिक ज्ञान सनातन के 'श्रीविष्णु, श्रीराम एवं श्रीकृष्ण' ग्रन्थ में दिया है ।

यह लघुग्रन्थ पढकर प्रत्येक को अधिकाधिक साधना की प्रेरणा मिले, यही श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**

पढें सनातन का लघुग्रन्थ !

श्रीरामरक्षास्तोत्र व हनुमानचालीसा (अर्थसहित)